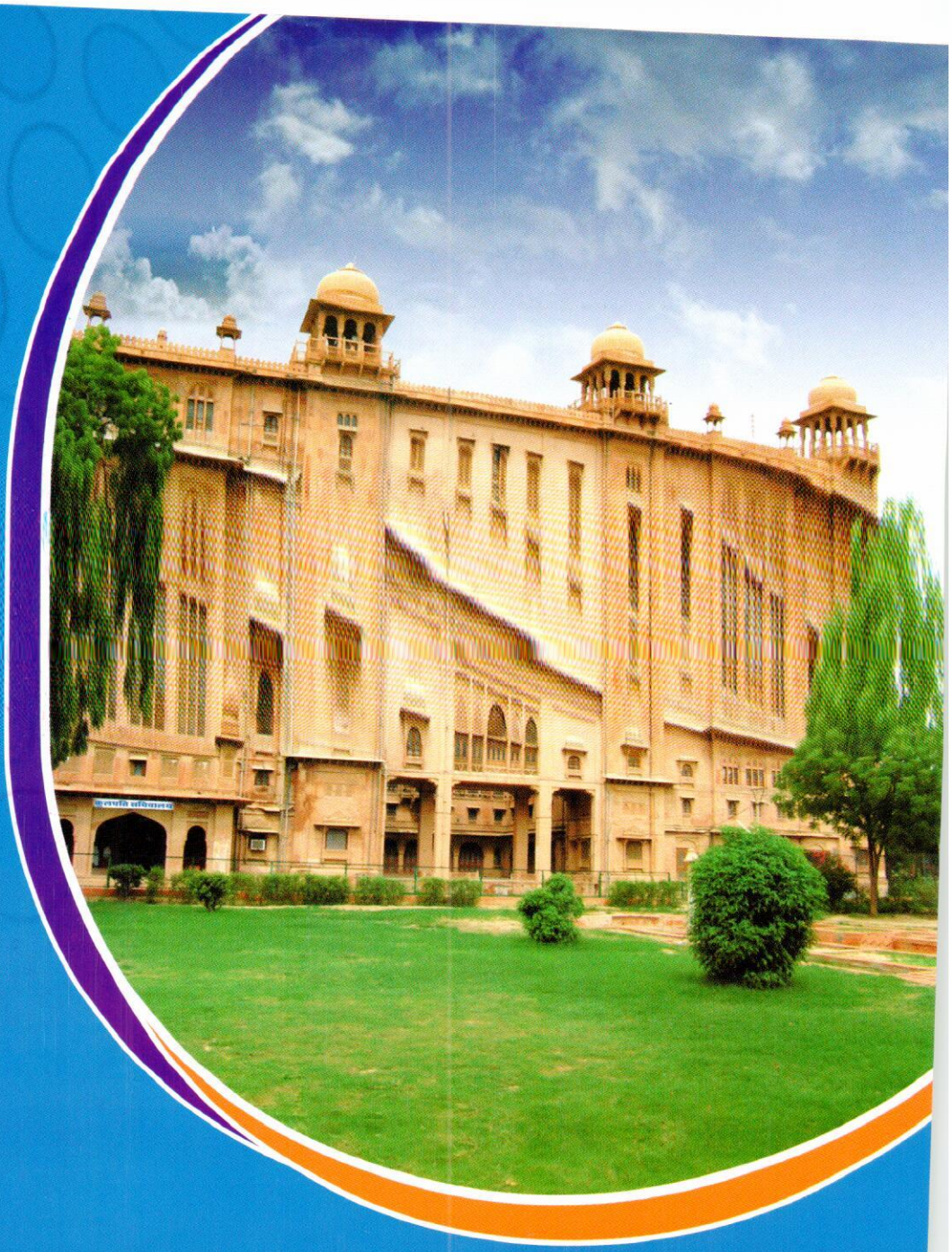

वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन
2020-2021

RAJASTHAN UNIVERSITY OF VETERINARY AND ANIMAL SCIENCES
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIKANER

वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन
2020-2021

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बिजेय भवन पैलेस कॉम्पलेक्स, पंडित दीनदयाल सर्किल के पास
बीकानेर-334 001 (राज.)
website : www.rajuvas.org

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

सम्पादक मण्डल

संरक्षक

प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति

मुख्य सम्पादक

प्रो. त्रिभुवन शर्मा

निदेशक, मानव संसाधन विकास

सलाहकार मंडल

श्री अजीत सिंह
कुलसचिव

श्री अरविन्द बिश्नोई
वित्त नियंत्रक

प्रो.आर.के.सिंह
संकाय अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, सी.वी.ए.एस., बीकानेर

प्रो. संजीता शर्मा
अधिष्ठाता, पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर

प्रो.राजीव जोशी
अधिष्ठाता, सी.वी.ए.एस., नवानियाँ, वल्लभनगर

प्रो. एस.सी. गोस्वामी
अधिष्ठाता, छात्र कल्याण

प्रो.हेमन्त दाधीच
निदेशक, अनुसंधान

प्रो.आर.के.धूड़िया
निदेशक, प्रसार शिक्षा
समन्वयक, जनसम्पर्क प्रकोष्ठ
एवं विशेषाधिकारी, कुलपति

प्रो.ए.पी.सिंह
निदेशक, क्लिनिक्स

प्रो. त्रिभुवन शर्मा
निदेशक, मानव संसाधन विकास

प्रो. अंजु चाहर
निदेशक, पी.एम.ई.

इंजि. पी.एम. मित्तल
निदेशक, कार्य

प्रो.विजय चौधरी
परीक्षा नियंत्रक

डॉ. अशोक डांगी
प्रभारी, आई.यू.एम.एस.

प्रकाशक

प्राथमिकता, नियंत्रण एवं मूल्यांकन निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर, राजस्थान–334 001
ईमेलः dpmerajuvas@gmail.com

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर # 9784105819

प्रस्तावना

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की स्थापना 13 मई 2010 को हुई। तत्पश्चात इस विश्वविद्यालय ने अल्पसमय में न केवल प्रदेश में, अपितु देश में भी अपनी अग्रणी पहचान बनाई है।विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर को यू.जी.सी 12–बी एक्ट के तहत मान्यता प्रदान की गई है। राज्य के सभी कृषि एवं पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों की केटेगरी में यू.जी.सी. से 12–बी मान्यता प्राप्त करने वाला वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर पहला विश्वविद्यालय बन गया है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालयों बीकानेर, नवानियाँ (उदयपुर) एवं पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं विद्या–वाचस्पति पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। स्नातक पाठ्यक्रम हेतु 240 सीटें, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम 18 विषयों हेतु 105 सीटें एवं विद्या–वाचस्पति पाठ्यक्रम 10 विषयों हेतु 33 सीटें उपलब्ध है। विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन में दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रदेश के 80 शिक्षण केद्रों पर चलया जा रहा है जिसमें प्रतिवर्ष लगभग 4177 विद्यार्थी प्रशिक्षित हो रहे हैं। राज्य सरकार ने विश्वविद्यालय में रिक्त चल रहे शैक्षणिक और अशैक्षणिक पदों की भर्ती की प्रक्रिया को मंजूरी प्रदान की है।

विश्वविद्यालय ने तमाम गतिविधियों को ई–गर्वनेंस के तहत लाकर प्रवेश, भर्ती और उत्तरपुस्तिका की जाँच की प्रक्रिया को ऑनलाइन किया है। ऑनलाइन उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच करवाने वाला यह विश्वविद्यालय देश का प्रथम विश्वविद्यालय बन गया है। विश्वविद्यालय के लिए बड़ी खुशी की बात है कि वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर को भारत के राजपत्र में प्रकाशित नोटिफिकेशन के तहत भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् की प्रथम अनुसूचि में शामिल किया गया है। इसके साथ ही विश्वविद्यालय के तीनों महाविद्यालय भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् की प्रथम अनुसूचि में शामिल हो गये है। वेटरनरी विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के सुचारू अध्ययन–अध्यापनके लिए वर्चुअल क्लास रूप की स्थापना की गयी है। इसके तहत राजुवास मोबाइल एप से विद्यार्थियों को जोड़ा गया है।

अनुसंधान के क्षेत्र में विश्वविद्यालय अभूतपूर्व कार्य कर रहा है। इस हेतु 8 पशुधन अनुसंधान केंद्र राज्य के बीकानेर, बीछवाल (बीकानेर), कोडमदेसर (बीकानेर), चांदन (जैसलमेर), नोहर (हनुमानगढ), नवानियां, (उदयपुर), बोजुंदा (चित्तौड़गढ़) और डग (झालावाड़) में स्थापित किए गए हैं। इनमें स्वदेशी गौवंश की 6 नस्लों राठी, साहीवाल, कांकरेज, थारपारकर, मालवी, गिर, एवं भेड़, बकरी और भैंसों की नस्लों के उन्नयन हेतु कार्य किए जा रहे हैं।इसी क्रम में गैर पारंपरिक क्षेत्रों में अनुसंधान हेतु राज्य सरकार के सहयोग से 10 उन्नत अनुसंधान केंद्र भी स्थापित किए गए हैं जिनमें पारंपरिक चिकित्सीय पद्धति से लेकर अंतरिक्ष आधारित अनुसंधान पर कार्य किये जा रहे हैं। इसके अलावा जैविक उत्पादों, पशु आपदा प्रबंधन, पशु जैव अपशिष्ट के निस्तारण, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी, चारा प्रबंधन एवं वन्यजीवों पर शोध हेतु अनुसंधान केंद्र स्थापित किए गए हैं जिनके माध्यम से प्रदेश के पशुपालकों को इन क्षेत्रों में भी नवीनतम शोध जानकारी उपलब्ध करवाई जा रही है।

राजुवास ने जैविक पशु उत्पाद प्रमाणीकरण कार्य को प्राथमिकता से शुरू किया है तथा पशुधन अनुसंधान कार्यों को क्रमबद्ध व समयबद्ध तरीके से जैविक मोड पर लाने का प्रयास किया जा रहा है।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजनाओं में पूर्व में स्वीकृत 21 परियोजनाओं का उद्देश्य पूर्ण हो गया है व आठ परियोजनाऐं इस वर्ष भी जारी है। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना ''रफ्तार'' के अन्तर्गत राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर को वर्ष 2020–21 के लिए 7.50 करोड़ रूपये अनुदान की स्वीकृति प्राप्त हुई है। इससे विश्वविद्यालय में 4 नई परियोजनाएं प्रारम्भ की जाएगी। नई परियोजनाओं के तहत राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में नवीन पशुधन प्रौद्योगिकियों के साथ डेयरी फार्म क्षमता का निर्माण, ग्रिड इंटरएक्टिव रूफटॉप और ग्राउंड फ्लोर सोलर फोटोवोल्टिक पावर प्लांट्स को स्थापित किया जाएगा।

विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों तक नवीनतम शोध की जानकारी पहुंचाने हेतु राज्य के 14 जिलों में वी.यू.टी.आर.सी. केन्द्र एवं एक कृषि विज्ञान केन्द्रमें स्थापित किये गए है। आगामी वर्षों में प्रदेश के प्रत्येक जिले में इस तरह का केन्द्र स्थापित किया जाना प्रस्तावित है। प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा पशुकल्याण सेवाओं के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों के लिए 858 पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कर वर्ष भर में कुल 18051 पशुपालकों को लाभांवित किया गया है।

राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित प्रशिक्षण केन्द्रों द्वारा व्हाट्सएप समूह बनाए गये है जिससे किसानों एवं पशुपालकों को पशुपालन से संबंधित सलाह दी रही है। वेटरनरी विश्वविद्यालय की महत्वाकांक्षी टोल–फ्री हैल्पलाइन सेवा से वर्ष 2020–21 में अब तक लगभग 45000 से अधिक कृषक, पशुपालक और विद्यार्थी लाभान्वित हो चुके है। पशुपालकों और कृषकों के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा तैयार ''धीणें री बात्यां'' रेडियो कार्यक्रम का प्रसारण राज्य के सभी 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रत्येक माह के तृतीय गुरूवार की सांय 5:30 बजे किया जा रहा है। इसका लाभ पूरे राज्य के किसानों व पशुपालकों को मिल रहा है। माह दिसम्बर 2020 में इस कार्यक्रम का 348 वां प्रसारण किया गया है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा एक नवाचार के रूप में राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल का शुभारंभ किया गया। इसके तहत विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा वैज्ञानिक और विशेषज्ञों की वार्ताएं और पशुपालकों व किसानों की शंकाओं का समाधान किया जाता है।

विश्वविद्यालय द्वारा गौशालाओं के तकनीकी सुदृढ़ीकरण अभियान हेतु पायलट प्रोजेक्ट के तहत विभिन्न जिलों में स्थित वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा अपने जिलों में स्थित 13 गौशालाओं को तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु गोद लिया गया है। विश्वविद्यालय के इन केन्द्रों के द्वारा गौशालाओं को उन्नत व स्वावलम्बित करने हेतु उचित मार्गदर्शन व सलाहकारी सेवाएं प्रदान की जा रही है जिससे भविष्य में यह गौशालाएं एक मॉडल के रूप में तकनीकी रूप से सुदृढ़ हो सके।

माननीय राज्यपाल, राजस्थान के कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर में संविधान पार्क की आधारशिला रखी गई है। इस पार्क के बनने से युवा पीढ़ी को लोकतांत्रिक प्रक्रिया की जानकारी और मूल भवना से जोड़ने का उद्देश्य पूरा हो सकेगा। विश्वविद्यालय में एक करोड़ रू. लागत से बनने वाले कौशल विकास केन्द्र का ऑनलाईन शिलान्यास दिनांक 28 अक्टूबर, 2020 को माननीय राज्यपाल द्वारा किया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से बनने वाले इस केन्द्र द्वारा किसानों, पशुपालकों और युवाओं को कौशल विकास और दक्षता निर्माण का प्रशिक्षण दिया जाएगा, ताकि वे पशुधन उत्पादनके क्षेत्र में जीवीकोपार्जन कर सकें।

इस वर्ष वेटरनरी विश्वविद्यालय ने उद्योग संस्थान, शोध संस्थान, विश्वविद्यालय व स्वयं सेवी संस्थान से आपसी सहयोग और साझा अनुसंधान के लिए आपसी करार (एम.ओ.यू.) किए गये।

राज्य सरकार ने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन के सम्बद्ध विभागों में समन्वय, वैज्ञानिकों के साथ संवाद और पशुपालकों की समस्याओं के त्वरित निराकरण के उद्देश्य से रीजनल एनिमल हस्बैन्ड्री एक्सटेंशन टेक्नोलॉजी फोरम (राहत) के गठन को मंजूरी प्रदान की।पशुओं और मत्स्य में रोगाणुरोधी (प्रतिजैविकी प्रतिरोधकता) की अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना (इनफार) में वेटरनरी विश्वविद्यालय को सहभागी केन्द्र के रूप में शामिल किया गया है।

पहली बार बनाए गए वेटरनरी विश्वविद्यालय के नियमों–परिनियमों को राज्य सरकार के परीक्षण उपरान्त राज्यपाल एवं राजुवास के कुलाधिपति की स्वीकृति प्रदान की गयी।

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा इस वर्ष उष्ट्र प्रजनन, अश्व प्रजनन और विश्व रैबीज दिवस पर तीन अलग–अलग अर्न्तराष्ट्रीय वेबिनार का सफल आयोजन किया गया। पशुचिकित्सा एवं पशुपालन में अनुसंधान, शिक्षण और शिक्षा प्रसार के विभिन्न विषयों पर नौ राष्ट्रीय वेबिनार एवं पशुधन प्रबंधन पर एक राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन भी आयोजित किया गया।

अखिल भारतीय अर्न्तविश्वविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता "एग्री यूनिफेस्ट–2020" में वेटरनरी विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं ने दो कैटेगरी में मेडल जीत कर राज्य का नाम रोशन किया है। राष्ट्रीय एन.सी.सी. शिविर केरल में आयोजित कैडेट्स घुड़सवारों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में 5 स्वर्ण और 1 रजत पदक प्राप्त किया।

अन्त में यहि कहना चाहुंगा कि राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय शिक्षण, शोध व प्रसार के क्षेत्र में सर्वोत्तम कार्य कर प्रदेश के विकास में सहयोग को कटिबद्ध है।

(विष्णु शर्मा)
कुलपति

अनुक्रमणिका

1. संगठनात्मक ढांचा 1–2

2. स्वीकृत–कार्यरत तथा रिक्त पदों का विवरण 3–6

2.1 शैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति 3

2.2 अशैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति 3–4

2.3 निजी सचिव एवं मंत्रालयिक पदों की श्रेणीवार स्थिति 4

2.4 अन्य शिक्षक एवं तकनीकी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति 5

2.5 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति 6

3. विभागीय प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक प्रमुख कार्य के विरूद्ध आलौच्य वर्ष में प्रगति एवं उसकी विगत 3 वर्ष से तुलना 7–11

3.1 अकादमिक कार्यक्रम 7

3.1.1 स्नातक पाठ्यक्रम (बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.) 8

3.1.2 स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम.वी.एससी.) 9

3.1.3 विद्या–वाचस्पति/डाक्टरेट पाठ्यक्रम (पीएच.डी.) 10

3.1.4 पशुपालन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (ए.एच.डी.पी.) 11

3.2 अनुसंधान परियोजनाएं 12

3.2.1 राष्ट्रीय कृषि विकास योजना 12

3.2.2 राज्य पोषित अनुसंधान परियोजनाएं 12

3.2.3 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद 12

3.2.4 विश्वविद्यालय रिवॉल्विंग फंड (परिकार्मी निधि) 13

3.3 प्रसार शिक्षा कार्यक्रम 13–15

4. आलौच्य वर्ष में विशेष पहल एवं उपलब्धि 16–18

5. सार संक्षेप 19–21

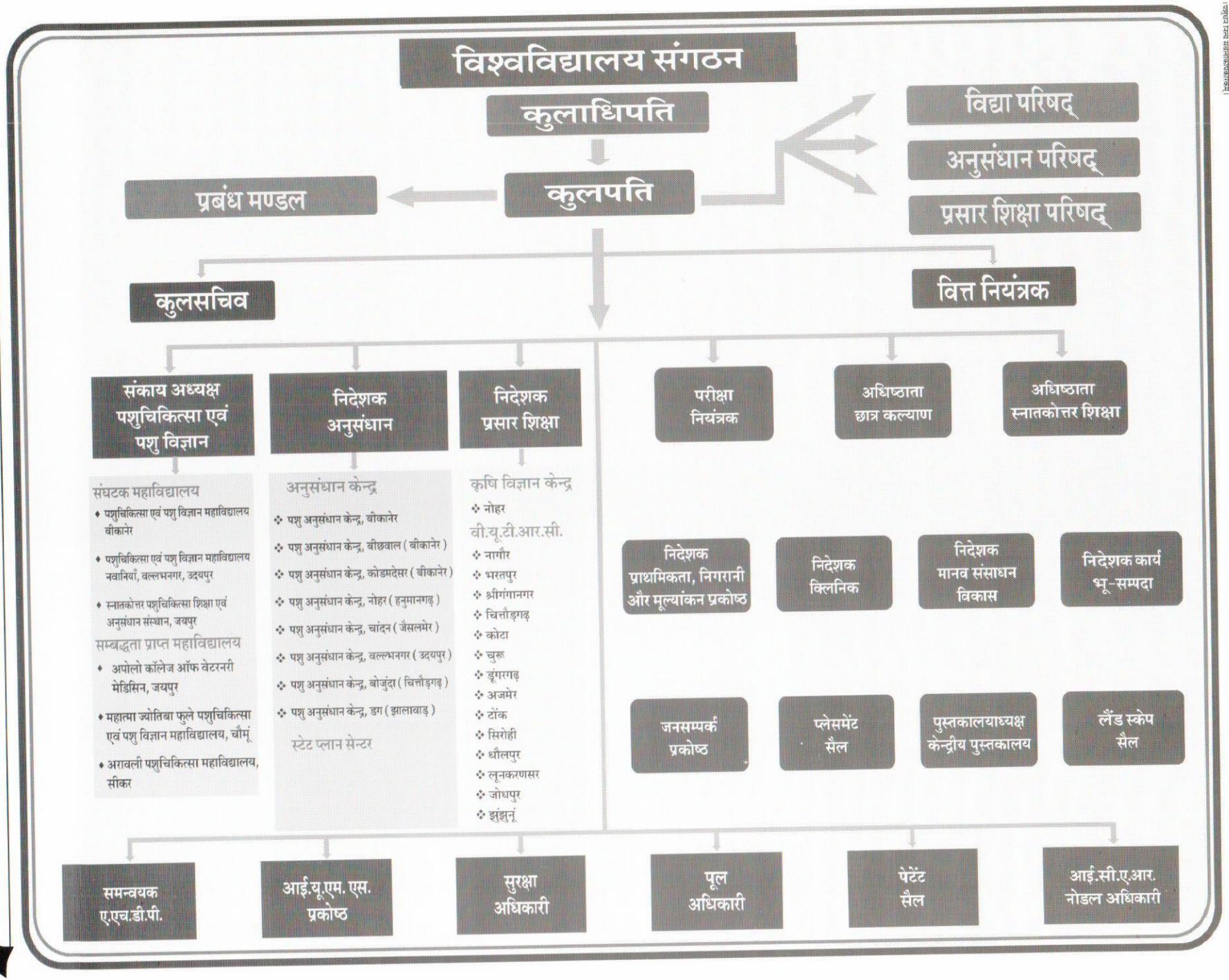
विश्वविद्यालय संगठन
कुलाधिपति
कुलपति
प्रबंध मण्डल
विद्या परिषद्
अनुसंधान परिषद्
प्रसार शिक्षा परिषद्
कुलसचिव
वित्त नियंत्रक
संकाय अध्यक्ष पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान
निदेशक अनुसंधान
निदेशक प्रसार शिक्षा
परीक्षा नियंत्रक
अधिष्ठाता छात्र कल्याण
अधिष्ठाता स्नातकोत्तर शिक्षा
संघटक महाविद्यालय
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय बीकानेर
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर
स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर
सम्बद्धता प्राप्त महाविद्यालय
अपोलो कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडिसिन, जयपुर
महात्मा ज्योतिबा फुले पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, चौमूं
अरावली पशुचिकित्सा महाविद्यालय, सीकर
अनुसंधान केन्द्र
पशु अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर
पशु अनुसंधान केन्द्र, बीछवाल (बीकानेर)
पशु अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर (बीकानेर)
पशु अनुसंधान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)
पशु अनुसंधान केन्द्र, चांदन (जैसलमेर)
पशु अनुसंधान केन्द्र, वल्लभनगर (उदयपुर)
पशु अनुसंधान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौड़गढ़)
पशु अनुसंधान केन्द्र, डग (झालावाड़)
स्टेट प्लान सेन्टर
कृषि विज्ञान केन्द्र
नोहर
वी.यू.टी.आर.सी.
नागौर
भरतपुर
श्रीगंगानगर
चित्तौड़गढ़
कोटा
चुरू
डूंगरगढ़
अजमेर
टोंक
सिरोही
धौलपुर
लूनकरणसर
जोधपुर
झुंझुनूं
निदेशक प्राथमिकता, निगरानी और मूल्यांकन प्रकोष्ठ
निदेशक क्लिनिक
निदेशक मानव संसाधन विकास
निदेशक कार्य भू-सम्पदा
जनसम्पर्क प्रकोष्ठ
प्लेसमेंट सैल
पुस्तकालयाध्यक्ष केन्द्रीय पुस्तकालय
लैंड स्केप सैल
समन्वयक ए.एच.डी.पी.
आई.यू.एम. एस. प्रकोष्ठ
सुरक्षा अधिकारी
पूल अधिकारी
पेटेंट सैल
आई.सी.ए.आर. नोडल अधिकारी

1. संगठनात्मक ढांचा

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 की धारा 1 उपखण्ड (3) के अन्तर्गत नवस्थापित विश्वविद्यालय है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना दिनांक 13 मई, 2010 को की गई। राजस्थान राज्य के माननीय राज्यपाल अपने पद के आधार पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति है। कुलपति विश्वविद्यालय का प्रधान शैक्षणिक और कार्यपालक अधिकारी है।

अपनी स्थापना की अल्पावधि में ही विश्वविद्यालय ने प्रबंधन मण्डल, अकादमिक परिषद्, अनुसंधान परिषद्और प्रसार परिषद् आदि संवैधानिक निकायों का गठन किया। इन निकायों के गठन के साथ ही विश्वविद्यालय नेकेन्द्रीय सलाहकार समिति, जनसम्पर्क प्रकोष्ठ और प्लेसमेंट प्रकोष्ठ का गठन किया। साथ ही विश्वविद्यालय नेअधिष्ठाता स्नातकोत्तर शिक्षा, परीक्षा नियंत्रक, अधिष्ठाता छात्र कल्याण, निदेशक क्लिनिक, निदेशक प्रसार शिक्षा,निदेशक कार्य, निदेशक पी.एम.ई., निदेशक मानव संसाधन विकास आदि महत्वपूर्ण विभागों की स्थापना की और कुछ अन्य समितियां बनाई गईजिससे विश्वविद्यालय अधिनियम के अनुरूप समस्त कार्यों का क्रियान्वयन किया जा सके।

राज्य में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति हेतु इस विश्वविद्यालय को स्थापित किया गया है। पशुपालन का राज्य की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। विश्वविद्यालय और संबद्ध महाविद्यालयों में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान और संबंधित विषयों के बारे में उचित और व्यवस्थित निर्देशन, शिक्षण–प्रशिक्षण, अनुसंधान और प्रसार शिक्षण करवाया जाता है। राजस्थान सरकार अध्यापन, शिक्षण अनुसंधान और प्रसार के प्रयासों को सुगठित करने में विश्वविद्यालय की हमेशा सहायक रही है और विश्वविद्यालय को वृद्धि उन्मुख और प्रगतिशील बनाने में भी सहयोग करती है।

विश्वविद्यालय अपने तीन प्रमुख अंग–शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के निष्पादन के लिए समस्त सुविधाओं से सुसज्जित है। वर्तमान में विश्वविद्यालय के तीन संघटक महाविद्यालय है, ये बीकानेर, उदयपुर (नवानियाँ) और जयपुर में स्थित है।

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

राजस्थान प्रदेश में पशुचिकित्सा शिक्षा का प्रभावी और शानदार इतिहास रहा है। आजादी के तुरन्त बाद ही राज्य का पहला पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय बीकानेर में वर्ष 1954 में स्थापित किया गया। मुख्य कॉलेज भवन में प्रशासनिक कार्यालय और 18 स्वतंत्र विभाग हैं जिनमें अति सुसज्जित प्रयोगशालाएं तथा स्नातक, स्नातकोत्तर एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम शिक्षण और अनुसंधान के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं हैं। परिसर में पशुओं की विभिन्न इकाईयां, रोग नैदानिक सुविधाएं, पुस्तकालय, कैंटीन, व्यायामशाला, खेलकूद सुविधाएं और बैंक की शाखा भी है।

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर

उदयपुर के नवानियां, वल्लभनगर में राज्य के दूसरे वेटरनरी कॉलेज की स्थापना वर्ष 2007 में की गई। दक्षिणी राजस्थान में पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में कुशल विशेषज्ञता विकसित करना तथा जनजाति क्षेत्र के पशुपालकों की आवश्यकतानुसार अनुसंधान, प्रचार एवं प्रसार गतिविधियों को विकसित करना इस महाविद्यालय के प्रमुख उद्देश्य हैं। इस महाविद्यालय में स्नातक पाठ्यक्रम के साथ ही पशुचिकित्सा के विभिन्न विषयों में स्नातकोत्तर, पीएच.डी. में शोध एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम की सुविधा भी उपलब्ध है।

स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान

जयपुर के राष्ट्रीय राजमार्ग–21, आगरा रोड़, जामडोली में स्थित इस संस्थान की स्थापना वर्ष 2012 में हुई। विश्वविद्यालय के इस परिसर को देश के चुनिन्दा 'सेन्टर ऑफ एक्सीलैन्स इन हायर एज्यूकेशन' के रूप में विकसित किया जा रहा है। वर्ष 2015–16 से इस संस्थान में स्नातक पाठ्यक्रम भी प्रारंभ कर दिया गया है। वर्तमान में यह संस्थान पशुचिकित्सा

और पशु विज्ञान के विभिन्न विषयों में स्नातकोत्तर एवं स्नातक डिग्री के साथ–साथ डिप्लोमा पाठ्यक्रम में भी उपाधि प्रदान कर रहा है।

विश्वविद्यालय से 7 संघटक एवं 73 सम्बद्ध संस्थानों में 2 वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम करवा रहे है, जिससे प्रतिवर्ष लगभग 4800 पैरावेट के प्रशिक्षण की क्षमता है। ये संस्थान बीकानेर, अलवर, भरतपुर, चुरू, दौसा, डूँगरपुर, हनुमानगढ़, जयपुर, झुंझुनूं, जोधपुर, करौली, कोटा, बूंदी, श्रीगंगानगर, सीकर, टोंक, झालावाड़, जालौर, जैसलमेर, चितौड़गढ़, धौलपुर, बाड़मेर, बारां और उदयपुर आदि जिलों में स्थित है। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के अलावा नए पशुपालन डिप्लोमा संस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ (उदयपुर), स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान केन्द्र, जयपुर, पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन, (जैसलमेर), पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़), पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चतौडगढ़), पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग (झालावाड़), में स्थित है।

विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्र है, जिनमें पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर, बीछवाल (बीकानेर), कोडमदेसर (बीकानेर), चांदन (जैसलमेर), नोहर (हनुमानगढ़), नवानियाँ, वल्लभनगर (उदयपुर), बोजुन्दा (चित्तौड़गढ) एवं डग (झालावाड़) में स्थापित है।इन अनुसंधान केन्द्रो के माध्यम से राज्य की 6 देशी गौवंश नस्लों राठी, थारपारकर, गिर, साहीवाल, मालवी और कांकरेज के विकास और संवर्द्धन का कार्य किया जा रहा है। देशी गौवंश पोषणयुक्त ए–2 दूध, अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता और कम लागत में हमारे लिए अधिक उपयोगी है। पशुधन अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से हैरिटेज जीन बैंक की अवधारणा के तहत पशुपालकों व गौशालाओं को स्वदेशी गौवंश प्रजनन के लिए उन्नत किस्म के बछड़े और सांड उपलब्ध करवाये जा रहे हैं। राजुवास द्वारा 2500 से भी अधिक श्रेष्ठतम नस्ल के बछड़े व सांड उपलब्ध करवाए गए हैं। इससे गौशालाओं और पशुपालकों के यहां स्वदेशी गौवंश की संख्या में बढ़ोतरी के साथ हैरिटेज जीन बैंक की अवधारणा को मूर्त रूप मिल रहा है। इन अनुसंधान केन्द्रों पर देशी गौवंश के अलावा भैंस, भेड़, बकरी के संवर्द्धन व उन्नयन तथा पशुधन चारा उत्पादन के कार्य किए जा रहे हैं धौलपुर में स्थित अंगई बकरी फार्म में सिरोही बकरी पर अनुसंधान किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालको तक नवीनतम शोध की जानकारी पहुचाने हेतु उनकी समस्याओं के समाधान हेतु 14 वी. यू.टी.आर.सी. केन्द्र बाकलिया, सूरतगढ़, कुम्हेर, बोजुन्दा, चूरू, टोंक, डूंगरपुर, सिरोही, कोटा, धौलपुर, लूणकरनसर, अजमेर, जोधपुर और झुंझुंनू में एवं एक कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर में स्थापित किये गए है। आगामी वर्षों में प्रदेश के प्रत्येक जिले में इस तरह का केन्द्र स्थापित किया जाना प्रस्तावित है।पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा पशुकल्याण सेवाओं के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों के लिए पशुपालक प्रशिक्षण शिविर, पशुचिकित्सा शिविर, पशुपालक गोष्ठी, वैज्ञानिक पशुपालक संवाद, फील्ड दिवस, जागरूकता शिविर और उन्नत तकनीकों का प्रदर्शन का आयोजन कर पशुपालकों को लाभांवित किया जाता है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा वित्त पोषित विश्वविद्यालय का पहला कृषि विज्ञान केन्द्र हनुमानगढ़ जिले के नोहर कस्बे में स्थापित है। केन्द्र द्वारा ऑन फार्म ट्रायल, प्रथम पंक्ति प्रदर्शन, संस्थानिक और गैर संस्थानिक प्रशिक्षणों सहित प्रसार शिक्षा के तहत क्षेत्रीय दिवस, किसान मेला, किसान गोष्ठी, प्रदर्शनी, परिणामों का प्रदर्शन, वैज्ञानिकों, कृषकों का भ्रमण, पशुचिकित्सा शिविर, फार्म साईंस क्लब, स्वयं सहायता समूहों के संयोजकों का सम्मेलन जैसे कार्य किये जाते है। यह कृषि विज्ञान केन्द्र नव तकनीक और प्रौद्योगिकी को पशुपालकों तक हस्तांतरण के महती कार्य में जुटा हुआ है।

2. स्वीकृत–कार्यरत तथा रिक्त पदों का विवरण

2.1 शैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति

पद कानाम	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
आचार्य	54	19	35
सह–आचार्य	103 (*3 आई.सी.ए.आर.)	14	89
सहायक आचार्य	209 (*1 आई.सी.ए.आर.)	102	107
योग	**366**	**135**	**231**

* आई.सी.ए.आर (4 पद)

2.2 अशैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति

	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
(i) अधिकारी			
कुलपति	1	1	...
अधिष्ठाता	4	....	4
अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर शिक्षा	1	....	1
निदेशक	2	....	2
कुलसचिव	1	1	0
वित्त नियंत्रक	1	1	...
परीक्षा नियंत्रक	1	....	1
अतिरिक्त निदेशक	3	....	3
निदेशक कार्य	1	1	...
पुस्तकालयाध्यक्ष	1	....	1
योग	**16**	**4**	**12**
(ii) कनिष्ठ अधिकारी			
उपकुलसचिव	1	...	1
सहायक कुलसचिव	6	3	3
उप वित्त नियंत्रक	1	1	0
सहायक निदेशक	2	...	2
सहायक अभियंता	5	...	5
उप–पुस्तकालयाध्यक्ष	1	1	...
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	3	...	3
लेखाधिकारी	2	2	0
विधि अधिकारी	1	1	...
कार्यक्रम समन्वयक	(**1 के.वी.के.)	...	1
विषय विशेषज्ञ	(**6 के.वी.के.)	...	6
योग	**29**	**8**	**21**

	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
(iii) मंत्रालयिक कर्मचारी (विश्वविद्यालय की सभी इकाईयों)	155 (*2 आई.सी.ए.आर.) (**3 के.वी.के.) (***1 जॉबबेसिस)	52	103
(iv) अन्य शिक्षक एवं तकनीकी कर्मचारी (विभाग, प्रयोगशाला, फार्म एव विभिन्न अनुसंधान केन्द्र)	218 (*5 आई.सी.ए.आर.) (**3 के.वी.के.) (***1 जॉबबेसिस)	41	177
(v) चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	420 (***89 जॉबबेसिस) (**3 के.वी.के.)	150	270
योग(i)+(ii)+(iii)+(iv)+(v)	**838**	**255**	**583**
महायोग **(शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक)**	**1204**	**390**	**814**

*आई.सी.ए.आर. (7 पद), ** के.वी.के.(9 पद), ***जॉब बेसिस(91 पद)

2.3 निजी सचिव एवं मंत्रालयिक पदों की श्रेणीवार स्थिति

क्र.सं.	पद कानाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त
1	निजी सचिव	1	1	...
2	सीनियर निजी सहायक	5	3	2
3	निजी सहायक	7	1	6
4	शीघ्र लिपिक	6 (**1 के.वी.के.)	0	6
5	अनुभाग अधिकारी	6	1	5
6	सहायक लेखाधिकारी	3	3	....
7	लेखाकार	7	7	.....
8.	सहायक लेखाकार	2	1	1
9.	सहायक अनुभाग अधिकारी	6	6	0
10.	वरिष्ठ लिपिक	20	17	3
11.	कनिष्ठ लिपिक	81 (*2 आई.सी.ए.आर.) (***1 जॉबबेसिस)	11	70
12.	स्टोरमुंशी	2	...	2
13.	कम्प्यूटर ऑपरेटर	4	1	3
14.	विधि सहायक	1	...	1
15.	प्रोग्रामर	2	...	2
16.	प्रोग्राम सहायक	2 (**2के.वी.के.)	...	2
	योग	**155**	**52**	**103**

*आई.सी.ए.आर (2 पद), ** के.वी.के.(3 पद), ***जॉब बेसिस(1 पद)

2.4 अन्य शिक्षक एवं तकनीकी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति

क्र.सं.	पद का नाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त
	अन्य शिक्षक			
1	वी.ए.एस.	7	...	7
2	पशुचिकित्सा अधिकारी	3 (*1 आई.सी.ए.आर)	...	3
3	अनुदेशक	13	...	13
	त्कनीकी कर्मचारी			
4	तकनीकी सहायक	58 (*1 आई.सी.ए.आर.)	13	45
5	फार्म मैनेजर	2 (**1 के.वी.के.)	...	2
6	फार्म सहायक	2	...	2
7	प्रोफेशनल असिस्टैंट (लाईब्रेरियन)	1	1	...
8	सहायक कृषि अधिकारी	4	2	2
9	डेयरी प्लांट ऑपरेटर	1	...	1
10	सीनियर मैकेनिक	1	...	1
11	प्रयोगशाला सहायक	37	2	35
12	जे.टी.ए.	2	...	2
13	आर्टिस्ट	1	...	1
14	स्टॉकमैन / एल.एस.ए.	15 (*3 आई.सी.ए.आर.)	0	15
15	राईडिंग इंस्ट्रैक्टर	1	1	...
16	कृषि पर्यवेक्षक	3	...	3
17	लाईब्रेरी सहायक	3	1	2
18	पोल्ट्री सहायक	1	...	1
19	डेयरी सहायक / मिल्क रिकॉर्डर	5	...	5
20	जूनि. कम्पाउंडर	2	1	1
21	बॉयलर ऑपरेटर	1	...	1
22	मैर्टन	1	1	...
23	ड्राईवर	34 (*2 के.वी.के.) (***1 जॉब बेसिस)	11	23
24	पम्प ऑपरेटर	4	3	1
25	मिस्त्री	4	1	3
26	कारपेन्टर	2	0	2
27	वायरमेन	1	1	...
28	पलम्बर	1	0	1
29	ब्लैक स्मिथ	1	...	1
30	जूनियर मैकेनिक / फार्म मैकेनिक	6	3	3
31	क्यूरेटर	1	...	1
	योग	**218**	**41**	**177**

*आई.सी.ए.आर. (5 पद), ** के.वी.के.(3 पद), ***1 जॉब बेसिस (1 पद)

2.5 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति

क्र.सं.	पद कानाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त
1	हैड माली	1	...	1
2	बुक लिफ्टर	3	0	3
3	प्रयोगशाला अटैंडेन्ट	61	21	40
4	फार्म वर्कर	78 (***60 जॉबबेसिस)	6	72
5	हाली / प्लगमैन	3	2	1
6	बुल्क अटैंडेंट	6	1	5
7	कैटल अटैंडेंट	46	13	33
8	सहायक	29 (**1 के.वी.के.)	5	24
9	लाईब्रेरी बॉय	4	2	2
10	तांगा ड्राईवर	1	...	1
11	गार्डनर	8	5	3
12	शीप अटैंडेंट	3	3	...
13	फराश	1	1	...
14	वॉचमैन	7	2	5
15	बस क्लीनर	4	1	3
16	स्वीपर	15 (***4 जॉबबेसिस)	9	6
17	पोल्ट्री अटैंडेंट	7	6	1
18	बुचर	1	1	...
19	मैड	1	0	1
20	हॉस्टल अटैंडेंट	3	3	...
21	शैफर्ड	2	0	2
22	चपरासी	94 (**2 के.वी.के.)	59	35
23	बेलदार	5	3	2
24	साईकिल सवार	1	0	1
25	एनिमल अटैंडेंट	26 (***16 जॉबबेसिस)	7	19
26	पोस्टमार्टम अटैंडेंट	1 (***1 जॉबबेसिस)	...	1
27	मैकेनिक	1	...	1
28	मल्टी टास्क सर्विसेज	4 (***4 जॉबबेसिस)	....	4
29	फार्म अटेण्डेन्ट	1 (***1 जॉबबेसिस)	....	1
30	वेटरनरी सर्विस	3 (***3 जॉबबेसिस)	....	3
	योग	**420**	**150**	**270**

** के.वी.के.(3 पद), ***जॉबबेसिस(89 पद)

3. विभागीय प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक प्रमुख कार्य के विरूद्ध आलौच्य वर्ष में प्रगति एवं उसकी विगत 3 वर्ष से तुलना

3.1 अकादमिक कार्यक्रम

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की भूमिका और शासनादेश के अनुसार यह परिकल्पित किया गया है कि विश्वविद्यालय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार कार्यक्रमों को और आगे बढ़ाएगा। विश्वविद्यालय ने छात्रों को विभिन्न स्तरों पर जैसे डिप्लोमा, स्नातक, स्नातकोत्तर और पी.एच.डी पर प्रशिक्षण देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर विधार्थियों को अनेकों शैक्षणिक और प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा शिक्षित एवं प्रशिक्षित कर रहा है ताकि उनमें ज्ञान एवं नेतृत्व विकसित हो सके और वे कुशल पेशेवर पशुचिकित्सक बन सकें तथा विश्वव्यापी आर्थिक चुनौतियों का मुकाबला कर सकें। विश्वविद्यालय में शिक्षण का कार्य संकाय अध्यक्ष, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान, अधिष्ठाता पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय तथा विभागाध्यक्षों के निर्देशन में करवाया जाता है। विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य मुख्यतः व्याख्यान एवं इलेक्ट्रानिक शिक्षण साधनों का उपयोग, प्रयोगशालाओं में प्रयोगात्मक अध्ययन, चिकित्सालयों और पशुधन फार्मो पर कराया जाता है। स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों का आंतरिक एवं बाह्य परिक्षाओं द्वारा मूल्यांकन किया जाता है।

विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों द्वारा विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिये स्नातक, स्नातकोत्तर तथा विद्या वाचस्पति स्तर पर विद्यार्थियों को अनुसंधान परियोजना निर्माण, विश्वविद्यालय व राष्ट्रीय स्तर पर सह पाठ्यक्रम कौशल प्रदान करने, शैक्षणिक भ्रमण और इंर्टनशिप प्रशिक्षण के लिये सुविधाऐं प्रदान की जाती हैं।

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के अन्तर्गत संघटक महाविद्यालय व डिप्लोमा संस्थान निम्न प्रकार से हैं।

1. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर
2. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर
3. स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर
4. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन, जैसलमेर
5. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर, हनुमानगढ़
6. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा, चितौड़गढ़
7. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग, झालावाड़

विश्वविद्यालय द्वारा निजी महाविद्यालयों / संस्थानों को संबद्धता

विश्वविद्यालय द्वारा स्नातक पाठ्यक्रम हेतु तीन निजी पशुचिकित्सा महाविद्यालय (अपोलो कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडिसिन, जयपुर, एम.जे.एफ. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, चौमूं जयपुर तथा अरावली पशुचिकित्सा महाविद्यालय, सीकर) को संबद्धता दी गई है। इसी प्रकार दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम हेतु प्रदेश में निजी संस्थानों को विश्वविद्यालय द्वारा संबद्धता प्रदान की जाती है।

वर्तमान में राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के संकाय में निम्नलिखित पाठ्यक्रम कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

उपाधि	पाठ्यक्रम	अवधि
स्नातक पूर्व	**पशुपालन में डिप्लोमा** (भारतीय पशुचिकित्सा परिषद अधिनियम, 1984 के अनुसार न्यूनतम पशुचिकित्सा सेवा प्रदाताओ के लिए बुनियादी योग्यता)	2 वर्ष
स्नातक	**बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.**	5 वर्ष 6 माह
स्नातकोत्तर	**एम.वी.एससी.** पशु शरीर रचना एवं औतिकी, पशु शरीर क्रिया विज्ञान, पशु जैव रसायन विज्ञान, पशु पोषण, पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी, पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन, पशु व्याधिकी, पशु सुक्ष्म जैविकी, पशु परजीवी विज्ञान, पशु जनस्वास्थ्य, पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र, पशु जानपदिक रोग विज्ञान एवं निवारक चिकित्सा, पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण, पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा, पशु जैव प्रौद्योगिकी, पशुचिकित्सा भेषज एवं विष विज्ञान, पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी विज्ञान	2 वर्ष
	एम.एस.सी पशु जैव प्रौद्योगिकी	2 वर्ष
विद्या वाचस्पति	**पीएच.डी.** पशु शरीर रचना एवं औतिकी, पशु शरीर क्रिया विज्ञान, पशु पोषण, पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी, पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन, पशु व्याधिकी, पशु सुक्ष्म जैविकी, पशु परजीवी विज्ञान, पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र, पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण, पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान, पशु जैव प्रौद्योगिकी, पशुचिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार शिक्षा, पशु जनस्वास्थय विज्ञान, पशुचिकित्सा भेषज एवं विष विज्ञान, पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी	3 वर्ष

3.1.1 स्नातक पाठ्यक्रम (बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.)

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में स्नातक (बी.वी.एस.सी एण्ड ए.एच.) पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय के सभी संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालयों (सी.वी.ए.एस., बीकानेर, सी.वी.ए.एस., नवानियां, वल्लभनगर, उदयपुर तथा पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर) एवं तीन संबद्ध निजी पशुचिकित्सा महाविद्यालयों (अपोलो कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडिसिन, जयपुर, एम.जे.एफ. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, चौमुं, जयपुर तथा अरावली पशुचिकित्सा महाविद्यालय, सीकर) में चलाये जा रहे हैं। भारतीय पशुचिकित्सा परिषद के नये मानदण्डो के अनुसार यह पाठ्यक्रम साढ़े पाँच वर्ष की अवधि (साढ़े चार वर्ष का पाठ्यक्रम और 1 वर्ष का इंर्टनशिप प्रशिक्षण) का है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालय, बीकानेर, नवानियाँ (उदयपुर) एवं पी. जी.आई.वी.ई.आर. जयपुर में यू.जी. पाठ्यक्रम में राज्य सरकार की स्वीकृति के बाद 80–80 सीटें की गई है। विगत वर्षों तक स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश राज्य की 85 प्रतिशत सीटों के लिये राजस्थान प्री पशुचिकित्सा परीक्षा (आर.पी.वी.टी) के माध्यम से किया जाता है। 15 प्रतिशत सीटों पर भारतीय पशुचिकित्सा परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रवेश दिया जाता है।

बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच. पाठ्यक्रम में छात्र संख्या (सत्र 2020–21)

क्र.सं.	संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालयों का नाम	बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.					कुल छात्र
		I	II	III	IV	V	
1.	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	68 प्रवेश अभी प्रक्रियाधीन	85	75	65	63	**288**
2.	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर	68 प्रवेश अभी प्रक्रियाधीन	85	67	63	61	**276**
3.	पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	68 प्रवेश अभी प्रक्रियाधीन	79	73	69	49	**270**
कुल छात्र			**249**	**215**	**197**	**173**	**834**

3.1.2 स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम.वी.एससी.)

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम.वी.एससी.) विश्वविद्यालय के निम्नलिखित तीन संघटक महाविद्यालयों में चलाये जा रहे है।

1. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर
2. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर
3. स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर

विश्वविद्यालय ने वर्तमान में उपलब्ध शिक्षकों की संख्या के आधार पर 105पी.जी. की सीटें है। स्टॉफ और सुविधाओं की उपलब्धता के आधार पर एम.वी.एससी. के लिए प्रत्येक विषय में कम से कम तीन और अधिकतम छः सीटें हैं। एम.वी.एससी. में प्रवेश प्री.पी.जी परीक्षा द्वारा राज्य की सीटों पर किया जाता है इसके अलावा प्रत्येक विषय में 1 सीट पर प्रवेश आईसीएआर द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्री.पी.जी. परीक्षा के माध्यम से किया जाता है। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में स्नात्तकोतर पाठ्यक्रम पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय नवानियाँ, उदयपुर तथा स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा व अनुसंधान संस्थान, जयपुर में निम्नलिखित विषयों में चलाये जा रहे हैं।

पशुचिकित्सा विज्ञान में स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम के लिए सीटों की संख्या

क्र. सं.	विषय	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर			पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ उदयपुर		पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	
		राज्य	आई.सी.ए.आर.	संदाय	राज्य	संदाय	राज्य	संदाय
1.	पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी	1	1	1	1	1	1	1
2.	पशु पोषण	1	1	3	1	2	1	1
3.	पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन	1	1	3	1	1	1	2
4.	पशु शरीर रचना एवं औतिकी	1	1	1	–	2	–	–
5.	पशुचिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार शिक्षा	1	1	1	1	–	1	1
6.	पशु जैव रसायन	1	1	1	–	–	1	1
7.	पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र	1	1	3	1	1	1	2
8.	पशु जानपदिक रोग विज्ञान एवं निवारक चिकित्सा	–	–	–	–	–	–	–
9.	पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान	1	1	3	1	1	1	1
10.	पशु सूक्ष्म–जैविकी	–	1	–	1	1	–	2
11.	पशु परजीवी विज्ञान	1	–	–	–	1	1	1
12.	पशु व्याधिकी	1	1	3	1	1	1	1
13.	पशु शरीर क्रिया विज्ञान	1	1	1	–	1	–	1
14.	पशुचिकित्सा जनस्वास्थ्य विज्ञान	1	–	–	–	1	–	1
15.	पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण	2	1	4	1	1	1	1
16.	पशु जैव प्रौद्योगिकी	–	–	–	–	–	–	–
17.	पशुचिकित्सा औषध एवं विष विज्ञान	–	–	2	–	–	–	–
18.	पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी	–	–	2	–	1	–	2
	कुल	14	12	28	9	15	10	18

नोट : प्रवेश के समय विश्वविद्यालय अपने संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर सीटों को किसी भी विषय में बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

एम.वी.एससी. पाठ्यक्रम में छात्र संख्या (सत्र 2020–21)

संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालयों का नाम	एम.वी.एससी.		कुल छात्र संख्या
	I	II	
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	53	62	115
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर	27	20	47
पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	28	25	53
कुल छात्र	**108**	**107**	**215**

3.1.3 विद्या–वाचस्पति / डाक्टरेट पाठ्यक्रम (पीएच.डी.)

डाक्टरेट पाठ्यक्रम में प्रवेश विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विनियमन के अनुसार विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्री. पी. जी. परीक्षा के आधार पर निम्नलिखित विषयों में दिये जाते हैं। पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर एवं पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर (उदयपुर) में डाक्टरेट पाठ्यक्रम सत्र 2015–16 से शुरू किया गया हैं। विश्वविद्यालय ने वर्तमान में उपलब्ध शिक्षकों की उपलब्धता के आधार पर चालू सत्र में 33 पीएच.डी. की सीटें हैं।

क्र. सं.	विषय	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर			पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ उदयपुर		पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	
		राज्य	आई.सी.ए.आर.	संदाय	राज्य	संदाय	राज्य	संदाय
1.	पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी	–	1	–	–	1	–	1
2.	पशु पोषण	1	1	–	–	–	1	1
3.	पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन	1	1	1	–	1	1	1
4.	पशु शरीर रचना एवं औतिकी	–	–	–	–	1	–	–
5.	पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र	1	1	–	1	–	1	–
6.	पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान	1	1	–	–	1	–	–
7.	पशु सुक्ष्म–जैविकी	–	1	1	–	–	–	–
8.	पशु व्याधिकी	1	1	1	–	–	–	–
9.	पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण	1	1	1	–	–	–	1
10.	पशु शरीर क्रिया विज्ञान	–	–	–	–	–	–	1
11.	पशुचिकित्सा जनस्वास्थ्य विज्ञान	1	–	–	–	–	–	–
12.	पशु जैव प्रौद्योगिकी	–	–	1	–	–	–	–
	कुल	**07**	**08**	**05**	**01**	**04**	**03**	**05**

नोट : प्रवेश के समय विश्वविद्यालय अपने संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर सीटों को किसी भी विषय में बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

पीएच.डी. पाठ्यक्रम में छात्र संख्या (सत्र 2020–21)

संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालय का नाम	पीएच.डी.			कुल छात्र
	I	II	III	
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	10	20	26	**56**
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर	1	2	6	**9**
पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	2	6	10	**18**
कुल छात्र	**13**	**28**	**42**	**83**

3.1.4 पशुपालन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (ए.एच.डी.पी.)

विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन में स्वरोजगारोन्मुख दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम शैक्षणिक सत्र 2007–08 से चलाया जा रहा है। विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम के लिए बुनियादी सुविधाऐं हॉस्टल, नैदानिक सुविधाऐं, फार्म सहित मौजूदा सुविधाओं का उपयोग कर रहा है। वर्ष 2020–21 में दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय के 7 संघटक एवं अन्य संबद्ध संस्थानों में चलायाजा रहा है।

विश्वविद्यालय के संघटक पशुपालन डिप्लोमा संस्थानों में छात्र संख्या (सत्र 2020–21)

क्र.सं.	संघटक एवं संबद्ध पशुपालन डिप्लोमा संस्थानों का नाम	डिप्लोमा पाठ्यक्रम		कुल छात्र संख्या
		I	II	
1.	पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	39	42	81
2.	पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर	47	45	92
3.	स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर	46	36	82
4.	पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, नोहर, हनुमानगढ़	45	44	89
5.	पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, चांदन, जैसलमेर	37	38	75
6.	पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, चित्तौड़गढ़	45	50	95
7.	पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, डग, झालावाड़	44	41	85

नोटः– प्रथम वर्ष प्रवेश प्रक्रियाधीन है।

स्वीकृत सीटों की संख्या का तुलनात्मक विवरण

पाठ्यक्रम	अवधि	स्वीकृत छात्र संख्या		
		2018–19	2019–20	2020–21
स्नातक	5 वर्ष 6 माह	240	240	240
स्नाकोत्तर	2 वर्ष	110	112	105
विद्या वाचस्पति	3 वर्ष	48	24	33
*स्नातक पूर्व (डिप्लोमा पाठयक्रम)	2 वर्ष	350	350	350

* संघटक पशुपालन डिप्लोमा संस्थाए

स्वीकृत पदों की संख्या का तुलनात्मक विवरण

पद का नाम	2018–19			2019–20			2020–21		
	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
आचार्य	49	08	41	54	8	46	54	19	35
सह–आचार्य	99	30	69	103	30	73	103	14	89
सहायक आचार्य	190	103	87	209	103	106	209	102	107
अधिकारी	15	3	12	16	3	13	16	4	12
कनिष्ठ अधिकारी	31	6	25	32	6	26	29	8	21
मंत्रालयिक कर्मचारी	156	53	103	160	52	108	155	52	103
तकनीकी कर्मचारी	212	50	162	214	51	163	218	41	177
चतफ्रर्थ श्रेणी कर्मचारी/चपरासी	405	203	202	413	204	209	420	150	270
योग	**1157**	**456**	**701**	**1201**	**457**	**744**	**1204**	**390**	**814**

3.2 अनुसंधान परियोजनाएँ

3.2.1 राष्ट्रीय कृषि विकास योजना :

राष्ट्रीय कृषि विकास योजनाओं में पूर्व में स्वीकृत 21 परियोजनाओं का उद्देश्य पूर्ण हो गया है व आठ परियोजनाऐं इस वर्ष भी जारी है। जयपुर में जूनोटिक रोगों का निदान, निगरानी एवं प्रतिक्रिया केन्द्र, जैसलमेर जिले में थारपारकर गौवंश के आनुवांशनिक उन्नयन् केन्द्र का क्रियान्वयन, की स्थापना की गई है।दक्षिणी राजस्थान में गाय–भैंसों की प्रजनन क्षमता बढ़ाने के लिए राजकीय पैरावेट को प्रशिक्षण दिया जाएगा। राजस्थान कोऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन की दुग्ध समितियों के सचिवों और प्रयोगशाला कार्मिकों को स्वच्छ और गुणवत्ता वाले दुग्ध उत्पादन के लिए दक्षता कार्यक्रम भी चलाए जा रहे है। राज्य में देशी नस्ल की मुर्गियों के जर्मप्लाज्म को गुणित करने के लिए पोल्ट्री इकाई का गठन किया जा रहा हैं। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना ''रफ्तार'' के तहत ही देशी गौवंश राठी के फार्म को जैविक डेयरी फार्म के रूप में विकसित करने के लिए 1 करोड़ 5 लाख रूपये की राशि व्यय की जा रही हैं। विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रो पर पशु आहार प्रसंस्करण इकाईयों की स्थापना की परियोजना को भी स्वीकृति मिली है। विश्वविद्यालय के पशु चिकित्सा उपचार एवं फार्म की बेहतरीन सेवाओं की परियोजनाएं भी शामिल है।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना ''रफ्तार'' के अन्तर्गत राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर को वर्ष 2020–21 के लिए 7.50 करोड़ रूपये अनुदान की स्वीकृति प्राप्त हुई है। इससे विश्वविद्यालय में 4 नई परियोजनाएं प्रारम्भ की जाएगी। नई परियोजनाओं के तहत राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में नवीन पशुधन प्रौद्योगिकियों के साथ डेयरी फार्म क्षमता का निर्माण, ग्रिड इंटरएक्टिव रूफटॉप और ग्राउंड फ्लोर सोलर फोटोवोल्टिक पावर प्लांट्स को स्थापित किया जाएगा। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत बकरी पालन के लिए जैविक सिरोही बकरी फार्म की स्थापना की जाएगी तथा किसान प्रशिक्षण और छात्रावास सुविधा भी राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की विभिन्न इकाइयों में कीजाएगी।

3.2.2 राज्य पोषित अनुसंधान परियोजनाएं:

राज्य पोषित अनुसंधान परियोजनाओ के तहत राठी गौवंश प्रजनन फार्म की स्थापना तथा प्रजनन के माध्यम से राठी गौवंश का संरक्षण, मूल्यांकन और सुधार (नोहर), कांकरेज गौवंश प्रजनन फार्म की स्थापना (कोडमदेसर), गिर गौवंश प्रजनन फार्म की स्थापना (नवानिया, वल्लभनगर, उदयपुर), डग (झालावाड़) में मालवी गौवंश पशु प्रजनन फार्म और पशु पालन में डिप्लोमा हेतु संस्थान की स्थापना, धौलपुर में लाभकारी बकरी फार्मिंग सिस्टम के प्रदर्शन के लिए बकरी प्रजनन फार्म, वैक्सीनोलॉजी एवं बायोलॉजिकल प्रोडक्ट रिसर्च सेंटर (बीकानेर), पशु रोग जाँच एवं निगरानी के लिए शीर्ष केन्द्र (बीकानेर), पशु विज्ञान में अंतरिक्ष आधारित प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए उत्कृष्ट केन्द्र (बीकानेर), वन्यजीव प्रबंधन और स्वास्थ्य अध्ययन केन्द्र(बीकानेर), प्रजनन के माध्यम से साहीवाल गौवंश का संरक्षण, मूल्यांकन और सुधार (कोडमदेसर), पारम्परिक और वैकल्पिक पशु चिकित्सा पद्धति केन्द्र (बीकानेर), पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारणप्रौद्योगिकी केन्द्र (बीकानेर), पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन और प्रौद्योगिकी केन्द्र (बीकानेर), जैविक पशु उत्पाद प्रौद्योगिकी केन्द्र (बीकानेर), पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र (बीकानेर), पशु आपदा प्रबंधन प्रौद्योगिकी केन्द्र (बीकानेर), प्रजनन के माध्यम से राठी गौवंश का मूल्यांकन और सुधार (बीकानेर), पशु विज्ञान इंजिनियरिंग और प्रौद्योगिकी केन्द्र (बीकानेर) परियोजनाएं कार्यरत है।

3.2.3 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद:

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं के अंतर्गत सूरती भैंस उन्नयन हेतु नेटवर्क परियोजना (वल्लभनगर), पशुओं की शल्य चिकित्सा स्थितियों के निदान, इमेजिंग और प्रबंधन पर अखिल भारतीय नेटवर्क कार्यक्रम (बीकानेर), किसानों की सिरोही बकरियों में आनुवाशिंक सुधार हेतु ए.आई.सी.आर.पी. (वल्लभनगर), मारवाड़ी बकरी सुधार हेतु ए.

आई.सी.आर.पी. (बीकानेर), सोनाडी भेड़ हेतु वृहद भेड़ बीज प्रजनन (वल्लभनगर), श्वान में पालन अनुभव व ज्ञानवर्द्धक इकाई (वल्लभनगर) कार्यशील है।

3.2.4 विश्वविद्यालय रिवॉल्विंग फंड (परिकार्मी निधि):

रिवॉल्विंग फंड (परिकार्मी निधि) के अंतर्गत विश्वविद्यालय के रिवॉल्विंग फंड के माध्यम से चारा एवं बीज उत्पादन वृद्धि(एल.आर.एस, चांदन), मारवाड़ी बकरी का विकास एवं संरक्षण (चांदन), पशु चिकित्सा एनाटॉमी की शिक्षण गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए पशुओं की विभिन्न प्रजातियों की हड्डियों का संरक्षण और अभिव्यक्ति (वल्लभनगर), कृषि गतिविधियों के माध्यम से आय वृद्धि (बोजून्दा), बछड़ों के लिए ओ.आर.एस. आपूर्ति (वल्लभनगर), उदयपुर परिसर में बायोगैस के माध्यम से वैकल्पिक विद्युत ऊर्जा उत्पादन (वल्लभनगर), सिराही बकरी प्रजनन परियोजना (बीछवाल), हरा चारा और बीज उत्पादन (बीछवाल), सेवण घास उत्पादन (कोडमदेसर), दुग्ध और दुग्ध उत्पादों का प्रसंस्करण और विपणन (नवानियां, उदयपुर), देशी गौवंश दुग्ध उत्पादों का उत्पादन(बीकानेर) "राजुवास मिल्क पार्लर" इकाइयाँ शामिल है।

3.3 प्रसार शिक्षा कार्यक्रम

प्रसार शिक्षा निदेशालय एक नोडल एजेन्सी के रूप में वेटरनरी विश्वविद्यालय की प्रसार–प्रचार सेवाओं को गांव–ढाणी तक पहुंचाना व पशुधन विकास के महत्ती कार्य मे जुटा हुआ है। पशुधन विकास के लिए विश्वविद्यालय के जनोपयोगी अनुसंधान कार्यों और उन्नत तकनीकों के शीघ्र हस्तांतरण के लिए निदेशालय वैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ–साथ पशुपालकों व गौशाला प्रबंधकों की उन्नत पशुपालक गोष्ठियों का आयोजन, सलाहकारी सेवाएं और संभावित पशुरोगों की रोकथाम के लिए रोग पूर्वानुमान बुलेटिन जारी करने जैसे कार्य करके कृषकों और पशुपालकों को लाभ पहुंचा रहा है। इसके साथ ही पशुओं के बांझपन निवारण शिविर, पशुओं की रोग निदान सेवाएं, कृषक प्रशिक्षण, कृषक–वैज्ञानिक संवाद, प्रथम पंक्ति प्रदर्शन जैसे आयोजनों में भी इस निदेशालय की सक्रिय भागीदारी रहती है। विश्वविद्यालय के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में यह निदेशालय प्रसार शिक्षा कार्यक्रमों के दिशा–निर्देश, निगरानी और मूल्यांकन जैसे कार्य करता है। राजुवास का प्रसार शिक्षा निदेशालय वैज्ञानिक प्रशिक्षण, सलाहकारी सेवाएं और संचार जैसे तीन प्रमुख क्षेत्रों में कार्य कर रहा है।

विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों तक नवीनतम शोध की जानकारी पहुंचाने हेतु उनकी समस्याओं के समाधान हेतु राज्य के 14 जिलों में वी.यू.टी.आर.सी. केन्द्र बाकलिया (नागौर), सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर), चूरू, कुम्हेर (भरतपुर), कोटा, सिरोही, डूंगरपुर, टोंक, धौलपुर, बौजूंदा (चितौड़गढ़), लूणकरणसर (बीकानेर), जोधपुर, झुंझुनूं तथा अजमेर में एवं एक कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) में स्थापित किये गए है। आगामी वर्षों में प्रदेश के प्रत्येक जिले में इस तरह का केन्द्र स्थापित किया जाना प्रस्तावित है। प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा पशुकल्याण सेवाओं के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों के लिए पशुपालक प्रशिक्षण शिविर **858** का आयोजन कर गत वर्ष में कुल **18051** पशुपालकों को लाभांवित किया जा चुका है।

ऑन लाईन प्रशिक्षण कार्यक्रम

कोरानो माहमारी के दौरान विश्वविद्यालय ने अभिनव नवाचार करते हुए किसानों एवं पशुपालकों के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ किये गये है। इस वर्ष राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों द्वारा अब तक **368** ऑनलाईन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये जिससे **6851** पशुपालक एंव कृषकों को लाभान्वित किया गया है।

अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनुसूचित जाति–उपयोजना के अन्तर्गत किसानों एवं पशुपालकों के लिए प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा उन्नत पशुपालन: जैविक पशुपालन एवं वैज्ञानिक पशुपालन एवं प्रबंधन विषयों पर दो दिवसीय

आफॅलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम विश्वविद्यालय के विभिन्न जिलो में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर आयोजित किये जा रहे है। इन प्रशिक्षणों से माह दिसम्बर तक **65** प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर लगभग **2019** अनुसूचित जाति जनजाति के पशुपालकों एवं कृषकों को लाभान्वित किया गया।

व्हाट्स–एप समूह के माध्यम से तकनीकी सलाहकारी सेवा

राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों द्वारा गठित 91 व्हाट्सएप समूह बनाए गये है जिससे किसानों एवं पशुपालकों को पशुपालन से संबंधित सलाह दी जाती है। इस समूह से लगभग 16300 से अधिक किसान एवं पशुपालक लाभान्वित हुए। व्हाट्सएप समूह के माध्यम से सलाह देने के साथ–साथ, टेलीफोन परामर्श सेवाएं भी प्रदान की जाती हैं।

टोल फ्री हैल्पलाइन सुविधा

वेटरनरी विश्वविद्यालय की महत्वाकांक्षी टोल–फ्री हैल्पलाइन सेवा पर कृषक, पशुपालक और विद्यार्थी किसी भी समय पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों, शिक्षकों अथवा अधिकारियों से बातचीत कर अपनी जिज्ञासा तथा शंकाओं का समाधान प्राप्त कर सकते है। वर्ष 2020–21 में अब तक लगभग 45000 से अधिक कृषक, पशुपालक और विद्यार्थी इस सेवा के माध्यम से लाभान्वित हो चुके है। यह हैल्पलाइन राज्य के पशुपालकों के लिए पशुचिकित्सा विशेषज्ञों से सम्पर्क कर समस्याओं का निदान करने का प्रमुख जरिया बना है।

''धीणें री बात्यां'' रेडियो कार्यक्रम का राज्य के 17 आकाशवाणी केन्द्रों के प्रसारणः

पशुपालकों और कृषकों के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा तैयार ''धीणें री बात्यां'' रेडियो कार्यक्रम का प्रसारण राज्य के सभी 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रत्येक माह के तृतीय गुरूवार की सांय 5:30 बजे किया जा रहा है। ''धींणे री बात्यां'' में विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा एवं पशुपालन के विशेषज्ञों द्वारा उपयोगी सामयिक वार्ताएं और नवीन तकनीकी और पशुपालन क्षेत्र में आ रहे नवाचारों के बारे में जानकारी दी जाती है। इसका लाभ पूरे राज्य के किसानों व पशुपालकों को मिल रहा है। माह दिसम्बर 2020 तक इस कार्यक्रम का 348 वां प्रसारण किया गया।

मासिक पत्रिका ''पशुपालन नए आयाम'' का प्रकाशन

विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रतिमाह एक मासिक पत्रिका ''पशुपालन नए आयाम'' का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में पशुपालकों को पशुपालन उपयोगी तकनीकी और वैज्ञानिक जानकारी, पशु रोगों और उनके उपचार के साथ–साथ पौष्टिक आहार, प्रजनन और पशु प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी जाती है। प्रतिमाह इस पत्रिका की 5000 प्रतियां प्रकाशित की जाती है जो पशुपालकों एवं किसानों को निःशुल्क वितरित की जाती है।

राजुवास "ई–पशुपालक चौपाल"

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्य के पशुपालकों और किसानों को समर्पित एक डिजीटल मंच **"ई–पशुपालक चौपाल"** का राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 151वीं जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर 2020 से शुभारम्भ किया गया। गांव व ढाणी में बैठे पशुपालकों व किसानों को पशु कल्याण, पशु उत्पादन तकनीक व प्शुपालन के क्षेत्र में राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी पहुंचाने के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा ई–पशुपालक चौपाल की शुरूआत की गयी है। इस चौपाल के माध्यम से राज्य के सुदूर गांव–ढ़ाणी में बैठे किसानों और पशुपालकों को इस सकारात्मक पहल का सीधा लाभ मिलेगा। पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान के विभिन्न विषयों पर विषय–विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों द्वारा वार्ताओं का प्रसारण ई–पशुपालक चौपाल की श्रृंखला के माध्यम से प्रत्येक माह के द्वितीय व चतुर्थ बुधवार को किया जा रहा है। अब तक सात ई–पशुपालक चौपाल वार्ताओं का प्रसारण कर इसके माध्यम से राज्य के किसानों एवं पशुपालकों को लाभान्वित किया गया।

गौशाला तकनीकी सुदृढ़ीकरण अभियान

विश्वविद्यालय द्वारा गौशालाओं के तकनीकी सुदृढ़ीकरण अभियान हेतु पायलट प्रोजेक्ट के तहत विभिन्न जिलों में स्थित वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा अपने जिलों में स्थित 13 गौशालाओं को तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु गोद लिया गया है। विश्वविद्यालय के इन केन्द्रों के द्वारा गौशालाओं को उन्नत व स्वावलम्बित करने हेतु उचित मार्गदर्शन व सलाहकारी सेवांए प्रदान की जा रही है जिससे भविष्य में यह गौशालाएं एक माडॅल के रूप में तकनीकी रूप से सुदृढ़ हो सके।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के नए भवन का ऑनलाइन शिलान्यास

वेटरनरी विश्वविद्यालय के एक मात्र कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के नए भवन का ऑनलाइन शिलान्यास 23 अक्टूबर, 2020 को पशुपालन मन्त्री, राजस्थान–सरकार श्री लालचन्द कटारिया मुख्य आतिथ्य, नोहर के विधायक श्री अमित चाचाण, कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्–कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोधपुर के निदेशक डॉ. एस.के. सिंह की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने ऑनलाइन कार्यक्रम का संचालन कर कृषि विज्ञान केन्द्र के उद्देश्यों की जानकारी दी।

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर पशु रोग निदान सेवाएं प्रारम्भ

विश्वविद्यालय के दशाब्दी वर्ष में विश्वविद्यालय के विभिन्न जिलों में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर रोग निदान सेवाएं प्रारम्भिक तौर पर प्रारम्भ कर दी गई है साथ ही इसे और अधिक प्रभावी बनाया जा रहा है। अब तक इन केन्द्रो पर 1588 दूध, रक्त, मूत्र एवं गोबर आदि के नमूनों की जांच कर पशुपालकों को पशुरोगों के प्रति जागरूक किया गया।

कौशल विकास केन्द्र का शिलान्यास

माननीय राज्यपाल, राजस्थान एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय में एक करोड़ रू. लागत से बनने वाले कौशल विकास केन्द्र का ऑनलाईन शिलान्यास दिनांक 28 अक्टूबर, 2020 को किया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के 1 करोड़ रूपये राशि के वित्तीय सहयोग से बनने वाले इस केन्द्र द्वारा किसानों, पशुपालकों और युवाओं को कौशल विकास और दक्षता निर्माण का प्रशिक्षण दिया जाएगा, ताकि वे पशुधन का उपयोग अपनी जीविका उपार्जन के लिए कर सकेगें।

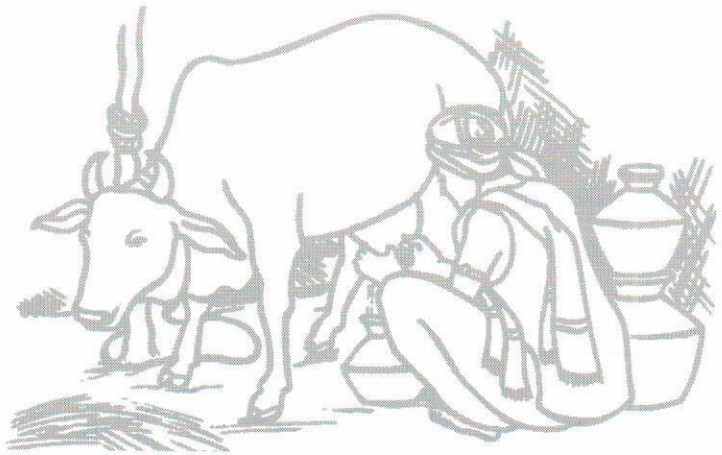

4. आलौच्य वर्ष में विशेष पहल एवं उपलब्धियां

रिक्त पदों पर भर्ती हेतु राज्य सरकार की मंजूरी

हाल ही में राज्य सरकार ने वेटरनरी विश्वविद्यालय में रिक्त चल रहे शैक्षणिक और अशैक्षणिक पदों की भर्ती की प्रक्रिया को मंजूरी प्रदान की है।

विश्वविद्यालय के नए नियम–परिमियम लागू

विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद पहली बार बनाए गए विश्वविद्यालय के नियमों–परिनियमों को राज्य सरकार के परिक्षण उपरान्त माननीय राज्यपाल की स्वीकृति प्रदान की गयी है तथा विश्वविद्यालय ने इन्हें तुरंत प्रभाव से लागू कर दिया है।

जोधपुर में नवीन वेटरनरी कॉलेज के लिए 80 बीघा भूमि का आंवटन

राज्य सरकार ने वर्ष 2019–20 की बजट घोषणा में राज्य में एक नये वेटरनरी महाविद्यालय को जोधपुर में खोलने की स्वीकृति प्रदान की थी। जोधपुर में खुलने वाला यह नया वेटरनरी कॉलेज, वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर का चौथा संघटक महाविद्यालय होगा। इस महाविद्यालय के लिए जोधपुर के नेतड़ा में राज्य सरकार द्वारा 80 बीघा भूमि का आंवटन किया गया है। गौरतलब है कि राज्य सरकार द्वारा इस महाविद्यालय के लिए 41 शैक्षणिक और गैर–शैक्षणिक पदों की स्वीकृति भी प्रदान की जा चुकी है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् : कृषि विश्वविद्यालय रैंकिंग–2019

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा कृषि विश्वविद्यालय की घोषित रैंकिंग–2019 में राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर ने 42 वां स्थान हासिल किया है। इस रैंकिंग में देश के कुल 73 कृषि एवं वेटरनरी विश्वविद्यालय शामिल हुए है।

स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर वीसीआई की प्रथम अनुसूचि में शामिल

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् की प्रथम अनुसूचि में शामिल किया गया है। इसके साथ ही विश्वविद्यालय के तीनों संघटक महाविद्यालय भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् की प्रथम अनुसूचि में शामिल हो गये है।

संविधान पार्क की स्थापना

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर में संविधान पार्क की आधारशिला 28 अक्टूबर 2020 को रखी गयी। इस पार्क के निर्माण से युवा पीढ़ी को लोकतांत्रिक प्रक्रिया की जानकारी और संविधान की मूल भावना से जोड़ने का उद्देश्य पूरा हो सकेगा। संवैधानिक मूल्यों के विकास और युवा पीढ़ी में लोकतांत्रिक आस्थाओं में अभिवृद्धि के लिए संवैधानिक पार्क सशक्त माध्यम बनेगा।

रीजनल एनिमल हस्बैन्ड्री एक्सटेंशन टेक्नोलॉजी फोरम (राहत) के गठन को मंजूरी

राज्य सरकार ने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन के सम्बद्ध विभागों में समन्वय, वैज्ञानिकों के साथ संवाद और पशुपालकों की समस्याओं के त्वरित निराकरण के उद्देश्य से रीजनल एनिमल हस्बैन्ड्री एक्सटेंशन टेक्नोलॉजी फोरम (राहत) के गठन को मंजूरी प्रदान की है।

पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर जैविक पशुपालन प्रमाणीकरण एवं सुदृढ़ीकरण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रों में जैविक पशु उत्पाद प्रमाणीकरण कार्य को प्राथमिकता से शुरू किया गया है। पशुधन अनुसंधान कार्यों को क्रमबद्ध व समयबद्ध तरीके से जैविक मोड पर लाने का प्रयास किया जा रहा है। बीछवाल फॉर्म पर 100 बकरियां व 50 हैक्टेयर भूमि के जैविक प्रमाणीकरण की प्रक्रिया वनसर्ट अर्न्तराष्ट्रीय प्रमाणीकरण संस्था द्वारा की जा रही है। प्रथम वर्ष प्रमाण पत्र भी प्राप्त हो गया है। कोडमदेसर फॉर्म की 65 हैक्टेयर तथा चांदन फॉर्म की 100 हैक्टेयर भूमि, 50 गाय व 100 बकरियों का प्रमाणीकरण प्रक्रिया राजस्थान जैविक प्रमाणीकरण संस्था (रोका) द्वारा की जा रही है।

प्रतिजैविकी प्रतिरोधकता की अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना (इनफार) में हुआ शामिल

पशुओं और मत्स्य में रोगाणुरोधी (प्रतिजैविकी प्रतिरोधकता) की अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना (इनफार) में वेटरनरी विश्वविद्यालय को सहभागी केन्द्र के रूप में शामिल किया गया है।

वर्चुअल क्लास रूम स्थापित

वेटरनरी विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के सुचारू अध्ययन–अध्यापन के लिए वर्चुअल क्लास रूम की स्थापना की गयी है। इसके तहत राजुवास मोबाइल एप से विद्यार्थियों को जोड़ा गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के 18051 पशुपालक एवं किसान लाभान्वित

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के 14 जिलों में पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया (नागौर), सूरतगढ़, चूरू, कम्हेर (भरतपुर), अजमेर, सिरोही, डूँगरपुर, टौंक, धौलपुर, कोटा, चित्तौड़गढ़, लूणकरनसर (बीकानेर), जोधपुर एवं झुंझुनू और कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा विभिन्न पशु कल्याण के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष 858 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके कुल 18051 पशुपालक व किसानों को लाभान्वित किया गया।

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर पशु रोग निदान सेवाएं प्रारम्भ

विश्वविद्यालय के दशाब्दी वर्ष में विश्वविद्यालय के विभिन्न जिलों में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर रोग निदान सेवाएं प्रारम्भिक तौर पर प्रारम्भ कर दी गई है साथ ही इसे और अधिक प्रभावी बनाया जा रहा है। अब तक इन केन्द्रो पर 1588 दूध, रक्त, मूत्र एवं गोबर आदि के नमूनों की जांच कर पशुपालकों को पशुरोगों के प्रति जागरूक किया गया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय का पांच संस्थानों के साथ आपसी करार (एम.ओ.यू.)

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2020–21 में चार संस्थानों राजस्थान वूलन इन्डस्ट्रीज एसोसिएशन बीकानेर, महाराणा प्रताप कृषि प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र, हिसार, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और अर्न्तराष्ट्रीय ब्रुक इंडिया संस्था से आपसी सहयोग और साझा अनुसंधान के लिए आपसी करार (एम.ओ.यू.) किए गये।

गौशाला तकनीकी सुदृढ़ीकरण अभियान के तहत राज्य की 13 गौशालाओं को गोद लिया

विश्वविद्यालय द्वारा गौशालाओं के तकनीकी सुदृढ़ीकरण अभियान हेतु पायलट प्रोजेक्ट के तहत विभिन्न जिलों में स्थित वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा अपने जिलों में स्थित 13 गौशालाओं को तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु गोद लिया गया है। विश्वविद्यालय के इन केन्द्रों के द्वारा गौशालाओं को उन्नत व स्वावलम्बित करने हेतु उचित मार्गदर्शन व सलाहकारी सेवांए प्रदान की जा रही है जिससे भविष्य में यह गौशालाएं एक माडॅल के रूप में तकनीकी रूप से सुदृढ़ हो सके।

राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल की शुरूआत

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्य के पशुपालकों और किसानों को समर्पित एक डिजीटल मंच **"ई–पशुपालक चौपाल"** का राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 151वीं जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर 2020 से शुभारम्भ किया गया। गांव व ढाणी में बैठे पशुपालकों व किसानों को पशु कल्याण, पशु उत्पादन तकनीक व प्शुपालन के क्षेत्र में राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी पहुंचाने के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा ई–पशुपालक चौपाल की शुरूआत की गयी है। इस चौपाल के माध्यम से राज्य के सुदूर गांव–ढ़ाणी में बैठे किसानों और पशुपालकों को इस सकारात्मक पहल का सीधा लाभ मिलेगा। पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान के विभिन्न विषयों पर विषय–विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों द्वारा वार्ताओं का प्रसारण ई–पशुपालक चौपाल की श्रृंखला के माध्यम से प्रत्येक माह के द्वितीय व चतुर्थ बुधवार को किया जा रहा है। अब तक सात ई–पशुपालक चौपाल वार्ताओं का प्रसारण कर इसके माध्यम से राज्य के किसानों एवं पशुपालकों को लाभान्वित किया गया।

आजीविका उपार्जन के लिए कौशल विकास केन्द्र की स्थापना

माननीय राज्यपाल, राजस्थान एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय में 1 करोड़ रू. लागत से बनने वाले कौशल विकास केन्द्र का शिलान्यास 28 अक्टूबर 2020 को किया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा इसकी वित्तीय स्वीकृति प्रदान की गयी है। इस केन्द्र द्वारा किसानों, पशुपालकों और युवाओं को कौशल विकास और दक्षता निर्माण का प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिससे वे पशुधन का उपयोग अपनी आजीविका उपार्जन के लिए कर सकेंगे।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के नए भवन का ऑनलाइन शिलान्यास

वेटरनरी विश्वविद्यालय के एक मात्र कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के नए भवन का ऑनलाइन शिलान्यास 23 अक्टूबर, 2020 को पशुपालन मन्त्री, राजस्थान–सरकार श्री लालचन्द कटारिया मुख्य आतिथ्य, नोहर के विधायक श्री अमित चाचाण, कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्– कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोधपुर के निदेशक डॉ. एस.के. सिंह की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने ऑनलाइन कार्यक्रम का संचालन कर कृषि विज्ञान केन्द्र के उद्देश्यों की जानकारी दी।

तीन अर्न्तराष्ट्रीय वेबिनार का सफल आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा इस वर्ष ऊष्ट्र प्रजनन, अश्व प्रजनन और विश्व रैबीज दिवस पर तीन अलग–अलग अर्न्तराष्ट्रीय वेबिनार का सफल आयोजन किया गया।

नौ राष्ट्रीय वेबिनार का हुआ आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय में इस वर्ष पशुचिकित्सा एवं पशुपालन में अनुसंधान, शिक्षण और शिक्षा प्रसार के विभिन्न विषयों पर नौ राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। पशुधन प्रबंधन पर एक राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन भी आयोजित किया गया।

एग्री यूनिफेस्ट व राष्ट्रीय एन.सी.सी. शिविर में जीते मेडल

अखिल भारतीय अर्न्तविश्वविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता "एग्री यूनिफेस्ट–2020" में वेटरनरी विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं ने दो कैटेगरी में मेडल जीत कर राज्य का नाम रोशन किया है। राष्ट्रीय एन.सी.सी. शिविर केरल में आयोजित कैडेट्स घुड़सवारों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में 5 स्वर्ण और 1 रजत पदक प्राप्त किए।

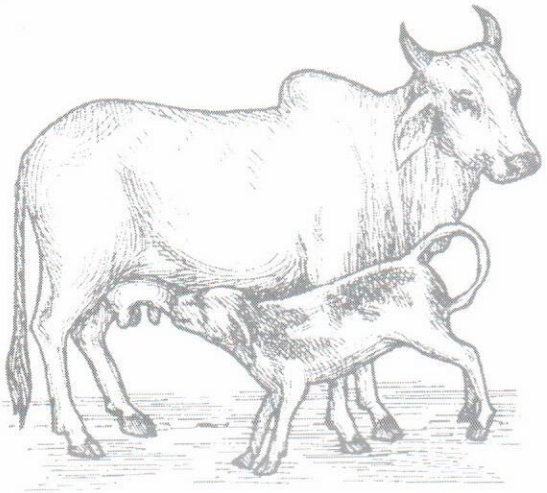

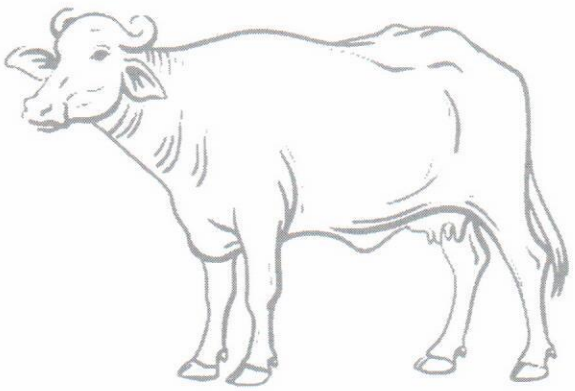

5. सार संक्षेप

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 की धारा 1 उपखण्ड (3) के अन्तर्गत नवस्थापित विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति स्वयं माननीय राज्यपाल है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना दिनांक 13 मई, 2010 को की गई।

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालयों बीकानेर, नवानियाँ (उदयपुर) एवं पी.जी.आई.वी.ई. आर., जयपुर में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं विद्या–वाचस्पति पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। स्नातक पाठ्यक्रम हेतु 240 सीटें, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम 18 विषयों हेतु 105 सीटें एवं विद्या–वाचस्पति पाठ्यक्रम 10 विषयों हेतु 33 सीटें उपलब्ध है। विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन में दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रदेश के 80 शिक्षण केद्रों पर चलया जा रहा है जिसमें लगभग 4177 विद्यार्थी प्रशिक्षित हो रहे हैं। विश्वविद्यालय के स्वीकृत कुल 1204 (शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक) पदों पर वर्तमान में 135 शैक्षणिक स्टॉफ तथा 255 अशैक्षणिक स्टाफ कार्यरत है। विश्वविद्यालय ने तमाम गतिविधियों को ई–गर्वनेंस के तहत लाकर प्रवेश, भर्ती और उत्तरपुस्तिका की जाँच की प्रक्रिया को ऑनलाइन किया है। ऑनलाइन उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच करवाने वाला यह विश्वविद्यालय देश का प्रथम विश्वविद्यालय बन गया है।वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर को भारत के राजपत्र में प्रकाशित नोटिफिकेशन के तहत भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् की प्रथम अनुसूचि में शामिल किया गया है।

राज्य सरकार ने विश्वविद्यालय में रिक्त चल रहे शैक्षणिक और अशैक्षणिक पदों की भर्ती की प्रक्रिया को मंजूरी प्रदान की है तथा अनुमति अनुसार भर्ती प्रक्रिया प्रारम्भ करने कि प्रक्रिया आरम्भ कर दी गई है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के सुचारू अध्ययन–अध्यापन के लिए वर्चुअल क्लास रूप की स्थापना की गयी है। इसके तहत राजुवास मोबाइल एप से विद्यार्थियों को जोड़ा गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों तक नवीनतम शोध की जानकारी पहुँचाने हेतु व उनकी समस्याओं के समाधान हेतु राज्य के 14 जिलों में वी.यू.टी.आर.सी. केन्द्र बाकलिया (नागौर), सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर), चूरू, कुम्हेर (भरतपुर), कोटा, सिरोही, डूंगरपुर, टोंक, धौलपुर, बौजूंदा (चितौड़गढ़), लूणकरणसर (बीकानेर), जोधपुर, झुंझुनूं तथा अजमेर में एवं एक कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) में स्थापित किये गए है। आगामी वर्षों में प्रदेश के प्रत्येक जिले में इस तरह का केन्द्र स्थापित किया जाना प्रस्तावित है। प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा पशुकल्याण सेवाओं के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों के लिए 858पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कर वर्ष भर में कुल 18051 पशुपालकों को लाभांवित किया जा चुका है।

कोरानो माहमारी के दौरान विश्वविद्यालय ने अभिनव नवाचार करते हुए किसानों एवं पशुपालकों के लिए इस वर्ष ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ किये। जिसमें अब तक **368** ऑनलाईन प्रशिक्षण से **6851** पशुपालक एंव कृषकों को लाभान्वित किया गया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनुसूचित जाति–उपयोजना के अन्तर्गत दो दिवसीय आफॅलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न जिलो में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर आयोजित किये गये। माह दिसम्बर तक 65 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर लगभग 2019 अनुसूचित जाति जनजाति के पशुपालकों एवं कृषकों को लाभान्वित किया गया।

राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों द्वारा गठित 91 व्हाट्सएप समूह बनाए गये है जिससे किसानों एवं पशुपालकों को पशुपालन से संबंधित सलाह दी जाती है।इस समूह से लगभग 16300 से अधिक किसान एवं पशुपालक लाभान्वित हुए।वेटरनरी विश्वविद्यालय की महत्वाकांक्षी टोल–फ्री हैल्पलाइन सेवा से वर्ष 2020–21 में अब तक लगभग 45000 से अधिक कृषक, पशुपालक और विद्यार्थी लाभान्वित हो चुके है।

राज्य के 14 पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा 1588 रक्त, दूध व गोबर के नमूनों की जांच कर पशुपालकों को रोगों के प्रति जागरूक कर रोग निदान सेवाएं प्रदान की गई।

पशुपालकों और कृषकों के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा तैयार ''धीणें री बात्यां'' रेडियो कार्यक्रम का प्रसारण राज्य के सभी 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रत्येक माह के तृतीय गुरूवार की सांय 5:30 बजे किया जा रहा है। इसका लाभ पूरे राज्य के किसानों व पशुपालकों को मिल रहा है। दिसम्बर 2020 में इस कार्यक्रम का 348 वां प्रसारण किया गया। विश्वविद्यालय के द्वारा प्रतिमाह एक मासिक पत्रिका ''पशुपालन नए आयाम'' का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में पशुपालकों को पशुपालन उपयोगी तकनीकी और वैज्ञानिक जानकारी, पशु रोगों और उनके उपचार के साथ–साथ पौष्टिक आहार, प्रजनन और पशु प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी जाती है। प्रतिमाह इस पत्रिका की 5000 प्रतियां प्रकाशित की जाती है जो पशुपालकों एवं किसानों को निःशुल्क वितरित की जाती है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्य के पशुपालकों और किसानों को समर्पित एक डिजीटल मंच **"ई–पशुपालक चौपाल"** का राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 151वीं जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर 2020 से शुभारम्भ किया गया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय के एक मात्र कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के नए भवन का ऑनलाइन शिलान्यास 23 अक्टूबर, 2020 को पशुपालन मन्त्री, राजस्थान–सरकार, श्री लालचन्द कटारिया के मुख्य आतिथ्यकी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। माननीय राज्यपाल, राजस्थान श्री कलराज मिश्र द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय में आई. सी.ए.आर के आर्थिक सहयोग से एक करोड़ रू. लागत से बनने वाले कौशल विकास केन्द्र का शिलान्यास किया गया है जिसके द्वारा पशुपालन के क्षेत्र में कौशल विकास को नये आयाम प्राप्त होगें।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजनाओं में पूर्व में स्वीकृत 21 परियोजनाओं का उद्देश्य पूर्ण हो गया है व आठ परियोजनाऐं इस वर्ष भी जारी है। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना ''रफ्तार'' के अन्तर्गत राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर को वर्ष 2020–21 के लिए 7.50 करोड़ रूपये अनुदान की स्वीकृति प्राप्त हुई है। इससे विश्वविद्यालय में 4 नई परियोजनाएं प्रारम्भ की जाएगी। नई परियोजनाओं के तहत राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में नवीन पशुधन प्रौद्योगिकियों के साथ डेयरी फार्म क्षमता का निर्माण, ग्रिड इंटरएक्टिव रूफटॉप और ग्राउंड फ्लोर सोलर फोटोवोल्टिक पावर प्लांट्स को स्थापित किया जाएगा।

इस वर्ष वेटरनरी विश्वविद्यालय ने राजस्थान वूलन इन्डस्ट्रीज एसोसिएशन, बीकानेर, महाराणा प्रताप कृषि प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र, हिसार और अर्न्तराष्ट्रीय ब्रुक इंडिया संस्था, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड से आपसी सहयोग और साझा अनुसंधान के लिए आपसी करार (एम.ओ.यू.) किए गये।

माननीय राज्यपाल, राजस्थान एवं राजुवास के कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर में संविधान पार्क की आधारशिला रखी। इस पार्क के बनने से युवा पीढ़ी को लोकतांत्रिक प्रक्रिया की जानकारी और मूल भवना से जोड़ने का उद्देश्य पूरा हो सकेगा।

राज्य सरकार ने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन के सम्बद्ध विभागों में समन्वय, वैज्ञानिकों के साथ संवाद और पशुपालकों की समस्याओं के त्वरित निराकरण के उद्देश्य से रीजनल एनिमल हस्बैन्ड्री एक्सटेंशन टेक्नोलॉजी फोरम (राहत) के गठन को मंजूरी प्रदान की।

राजुवास ने जैविक पशु उत्पाद प्रमाणीकरण कार्य को प्राथमिकता से शुरू किया है। पशुधन अनुसंधान कार्यों को क्रमबद्ध व समयबद्ध तरीके से जैविक मोड पर लाने का प्रयास किया जा रहा है। बीछवाल फॉर्म पर 100 बकरियां व 50 हैक्टेयर भूमि के जैविक प्रमाणीकरण की प्रक्रिया वनसर्ट अर्न्तराष्ट्रीय प्रमाणीकरण संस्था द्वारा की जा रही है। प्रथम वर्ष प्रमाण पत्र भी प्राप्त हो गया है। कोडमदेसर फॉर्म की 65 हैक्टेयर तथा चांदन फॉर्म की 100 हैक्टेयर भूमि, 50 गाय व 100 बकरियों का प्रमाणीकरण प्रक्रिया राजस्थान जैविक प्रमाणीकरण संस्था (रोका) द्वारा की जा रही है।

पशुओं और मत्स्य में रोगाणुरोधी (प्रतिजैविकी प्रतिरोधकता) की अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना (इनफार) में वेटरनरी विश्वविद्यालय को सहभागी केन्द्र के रूप में शामिल किया गया है।पहली बार बनाए गए वेटरनरी विश्वविद्यालय के नियमों–परिनियमों को राज्य सरकार के परीक्षण उपरान्त राज्यपाल एवं राजुवास के कुलाधिपति की स्वीकृति प्रदान की गयी।

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा इस वर्ष उष्ट्र प्रजनन, अश्व प्रजनन और विश्व रैबीज दिवस पर तीन अलग–अलग अर्न्तराष्ट्रीय वेबिनार का सफल आयोजन किया गया। पशुचिकित्सा एवं पशुपालन में अनुसंधान, शिक्षण और शिक्षा प्रसार के विभिन्न विषयों पर नौ राष्ट्रीय वेबिनार एवं पशुधन प्रबंधन पर एक राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन भी आयोजित किया गया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा तकनीकी सुदृढ़ीकरण के लिए राज्य की 13 गौशालाओं को गोद लिया गया है। इसके तहत विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और विशेषज्ञ उन्नत पशुपालन तकनीकों, प्रजनन विकास, नस्ल सुधार, संतुलित पोषण, रोग निदान व उपचार विषयों पर परामर्श देंगे।

राज्य सरकार ने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन के सम्बद्ध विभागों में समन्वय, वैज्ञानिकों के साथ संवाद और पशुपालकों की समस्याओं के त्वरित निराकरण के उद्देश्य से रीजनल एनिमल हस्बैन्ड्री एक्सटेंशन टेक्नोलॉजी फोरम (राहत) के गठन को मंजूरी प्रदान की।

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा इस वर्ष उष्ट्र प्रजनन, अश्व प्रजनन और विश्व रैबीज दिवस पर तीन अलग–अलग अर्न्तराष्ट्रीय वेबिनार का सफल आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में इस वर्ष पशुचिकित्सा एवं पशुपालन में अनुसंधान, शिक्षण और शिक्षा प्रसार के विभिन्न विषयों पर नौ राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया तथा पशुधन प्रबंधन पर एक राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन भी आयोजित किया गया है।

प्रथम बार बनाए गए वेटरनरी विश्वविद्यालय के नियमों–परिनियमों को राज्य सरकार के परीक्षण उपरान्त राज्यपाल एवं राजुवास के कुलाधिपति की स्वीकृति प्रदान की गयी।